• वास्तु...

घर में हमेशा रहेगा पैसा

घर की सजावट केवल दिखावे के लिए नहीं होती, बल्कि यह हमारी एनर्जी, सोच और खुशहाली पर भी गहरा असर डालती है। वास्तु शास्त्र के मुताबिक घर में रखी चीजों की दिशा, रंग और सजावट का तरीका धन, पॉजिटिविटी और रिश्तों की मजबूती से जुड़ा माना जाता है। हाल ही में वास्तु और होम डेकोर से जुड़े टिप्स को लेकर एक दिलचस्प ट्रेंड देखने को मिल रहा है, जिसमें लोग अपने घरों को इस तरह सजा रहे हैं कि वातावरण शांत, खुशहाल और ऊर्जा से भरपूर महसूस हो।

▶ घर में उत्तर और पूर्व दिशा को धन और अवसरों की दिशा माना जाता है। विशेषज्ञों के अनुसार इन दिशाओं को साफ-सुथरा और रोशन रखना बेहद फायदेमंद होता है। यहां भारी फर्नीचर या बेकार सामान रखने से बचना चाहिए. अगर संभव हो तो इस स्थान पर पौधें, छोटा फाउंटेन या पॉजिटिविटी की प्रतीकात्मक सजावट रखी जा सकती है। माना जाता है कि इससे

आर्थिक अवसर बढ़ते हैं और घर में स्थिरता बनी रहती है।

▶ वास्तु के अनुसार घर की दीवारों के रंग भी हमारे मूड और ऊर्जा पर असर डालते हैं। ड्राइंग रूम और लिविंग एरिया में हल्के और गर्म रंग जैसे क्रीम, हल्का पीला या स्काई ब्लू सकारात्मक माहौल बनाते हैं. वहीं बेडरूम में सॉफ्ट पेस्टल शेड्स शांति और सुकून देते हैं। बहुत गहरे या चटक रंगों का इस्तेमाल कम करना बेहतर माना जाता है। क्योंकि ये कभी-कभी तनाव को बढ़ा सकते हैं।

▶ मुख्य दरवाजा घर में आने वाली एनर्जी का एंट्री गेट माना जाता है। इसे साफ-सुथरा और आकर्षक रखना शुभ माना जाता है. दरवाजे के आसपास टूट-फूट, जाले या बिखराव न हो, इस बात का ध्यान रखना चाहिए. दरवाजे के पास नेमप्लेट साफ लिखी हो और दरवाजे के आगे गंदगी जमा न हो, ये सकारात्मकता और सम्मान का प्रतीक माना जाता है।

▶ घर के अंदर सुकून भरा माहौल बनाने के लिए हल्की रोशनी, शांत तस्वीरें और नैचुरल डेकोर बेहतरीन विकल्प माने जाते हैं। बेडरूम या लिविंग स्पेस में बहुत ज्यादा शोपीस या अव्यवस्था से बचना चाहिए। पौधे, सुगंधित मोमबत्तियां और नेचुरल सजावट घर को लाइव और पॉजिटिव बनाते हैं।

• महत्व...

पीपल के पेड़ की पूजा

सनातन परंपरा में पीपल के पेड़ की पूजा का बहुत ज्यादा महत्व माना गया है। यही कारण है कि भारत के कोने-कोने में आपको लोग पीपल की पूजा करते हुए दिख जाएंगे। हिंदू मान्यता के अनुसार पीपल के पेड़ पर ब्रह्मा, विष्णु और भगवान शंकर यानि त्रिदेव का वास

होता है। श्रीमद्भगवद गीता में भगवान ने स्वयं को वृक्षों में पीपल बताया है। हिंदू मान्यता के अनुसार पीपल पर धन की देवी माता लक्ष्मी और पितरों का भी वास होता है. आइए पीपल की पूजा के देवी देवताओं से जुड़ाव के साथ उसकी पूजा के नियम और लाभ को विस्तार से जानते हैं।

⏩ हिंदू मान्यता के अनुसार रविवार के दिन पीपल पर माता लक्ष्मी की बहन दरिद्रा का वास होता है, इसलिए रविवार को भूलकर भी पीपल की पूजा नहीं करना चाहिए। इस नियम की अनदेखी करने पर व्यक्ति को दुख-दुर्भाग्य झेलना पड़ता है।

⏩ हिंदू मान्यता के अनुसार पीपल की पूजा करने वाले व्यक्ति को पीपल के पेड़ को भूलकर भी शनिवार और रविवार के दिन नहीं काटना या कटवाना चाहिए। यदि घर के किसी कोने पर कोई पेड़ निकल आए तो उसे वहां से हटवाकर किसी दूसरे स्थान पर लगवा देना चाहिए।

⏩ पीपल के पेड़ को एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर लगाने से पहले भगवान विष्णु का ध्यान करके इसके लिए क्षमा मांगना चाहिए।

⏩ हिंदू मान्यता के अनुसार धन की देवी माता लक्ष्मी की कृपा पाने के लिए व्यक्ति को गुरुवार के दिन पीपल के पत्ते को शुद्ध जल से साफ करके उस पर केसर से 'ऊं श्रीं ह्रीं श्रीं नमः' मंत्र माता लक्ष्मी को अर्पित करना चाहिए. मान्यता है कि पीपल के इस उपाय से मां लक्ष्मी प्रसन्न होकर साधक को धन-धान्य का आशीर्वाद प्रदान करती हैं।

⏩ यदि आपकी कुंडली में शनि से संबंधित दोष जैसे ढैय्या या फिर साढ़ेसाती है तो आपको शनिवार के दिन विशेष रूप से पीपल पर जल अर्पित करना चाहिए। पीपल की जड़ पर जल चढ़ाने के बाद आपको आटे का चौमुखा दीया बनाएं और उसमें सरसों का तेल और रुई की बाती बनाकर जलाएं। इसके बाद पीपल की सात बार परिक्रमा करें।

⏩ यदि आप को हर समय किसी शत्रु का भय बना रहता है, तो आपको शनिवार के दिन पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर हनुमान चालीसा का विशेष रूप से सात बार पाठ करना चाहिए।

⏩ जीवन में किसी बड़ी समस्या से परेशान हों और उसका समाधान न निकल रहा हो तो किसी पीपल के पेड़ के नीचे शिवलिंग स्थापित करें तथा उसकी प्रतिदिन पूजा करें।

⏩ पीपल की पूजा करने से पितरों को शांति मिलती है और प्रसन्न होकर आप पर अपना आशीर्वाद बरसाते हैं।

⏩ पीपल की पूजा से शनिदेव प्रसन्न होते हैं और कुंडली का शनि दोष दूर होता है. शनि की ढैय्या और साढ़ेसाती के कष्टों को दूर करने के लिए पीपल की पूजा अत्यधिक प्रभावी मानी गई है।

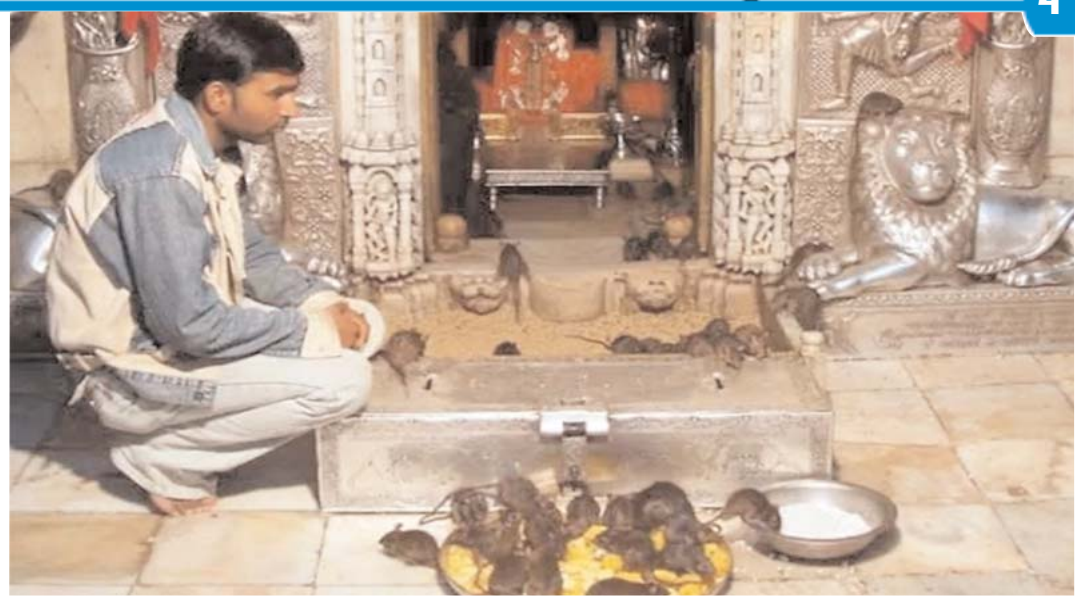

भारत ये रहस्यमयी मंदिर

बीकानेर के पास देशनोक में स्थित, करणी माता मंदिर को 'चूहों का मंदिर' कहा जाता है। हजारों चूहे, जिन्हें पवित्र माना जाता है, मंदिर परिसर में आजादी से घूमते हैं। भक्त मानते हैं कि ये चूहे करणी माता के पुनर्जन्म लिए हुए अनुयायी हैं।

चूहों द्वारा कुतरे गए भोजन को खाना शुभ माना जाता है, और सफेद चूहे को देखना बहुत सौभाग्य लाता है। मंदिर का संगमरमर का बाहरी हिस्सा और चांदी के दरवाजे इसकी रहस्यमयता को बढ़ाते हैं...

भारत को अक्सर मंदिरों की भूमि कहा जाता है, जहां देश के हर कोने में मंदिर हैं। जहां कई मंदिर अपनी भव्यता, इतिहास या वास्तुकला के लिए जाने जाते हैं, वहीं कुछ अपनी अनोखी विशेषताओं के कारण अलग पहचान रखते हैं। ये मंदिर पारंपरिक परंपराओं से हटकर हैं, चाहे वह पूजे जाने वाले देवता हों, किए जाने वाले अनुष्ठान हों, या उनसे जुड़ी कहानियां हों। इन मंदिरों में जाना न केवल एक आध्यात्मिक यात्रा है, बल्कि एक दिलचस्प सांस्कृतिक अनुभव भी है. यहां भारत के कुछ सबसे अनोखे मंदिरों का विस्तृत विवरण दिया गया है-

● **राजस्थान में करणी माता मंदिर :** बीकानेर के पास देशनोक में स्थित, करणी माता मंदिर को 'चूहों का मंदिर' कहा जाता है। हजारों चूहे, जिन्हें पवित्र माना जाता है, मंदिर परिसर में आजादी से घूमते हैं। भक्त मानते हैं कि ये चूहे करणी माता के पुनर्जन्म लिए हुए अनुयायी हैं। चूहों द्वारा कुतरे गए भोजन को खाना शुभ माना जाता है, और सफेद चूहे को देखना बहुत सौभाग्य लाता है। मंदिर का संगमरमर का बाहरी हिस्सा और चांदी के दरवाजे इसकी रहस्यमयता को बढ़ाते हैं, लेकिन यह चूहों की पूजा का दृश्य ही है जो इसे सच में अनोखा बनाता है।

● **राजस्थान में बुलेट बाबा मंदिर :** जोधपुर के पास स्थित ओम बन्ना मंदिर को बुलेट बाबा मंदिर के नाम से जाना जाता है। यहां एक रॉयल एनफील्ड बुलेट मोटरसाइकिल की पूजा की जाती है। लोककथाओं के अनुसार, ओम सिंह राठौड़ की इस जगह पर एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी, लेकिन पुलिस द्वारा जब्त किए जाने के बावजूद मोटरसाइकिल रहस्यमय तरीके से उसी जगह पर वापस आ गई। स्थानीय लोगों ने इसकी पूजा करना शुरू कर दिया, और आज, यात्री सुरक्षित यात्रा के लिए आशीर्वाद लेने के लिए यहा रुकते हैं।

● **स्तंभेश्वर महादेव मंदिर, गुजरात :** गुजरात के कवि कंबोई में स्थित, स्तंभेश्वर महादेव मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। इसकी अनोखी विशेषता समुद्र तट पर इसका स्थान है। दिन में दो बार, ज्वार के समय, मंदिर पूरी तरह से पानी में डूब जाता है और फिर भाटा के समय फिर से दिखाई देता है। भक्त इस प्राकृतिक घटना को देखने के लिए अपनी यात्रा का समय तय करते हैं, जो हिंदू दर्शन में सृष्टि और विनाश के शाश्वत चक्र का प्रतीक है।

● **कामाख्या मंदिर, असम :** गुवाहाटी में नीलाचल पहाड़ी पर स्थित, कामाख्या मंदिर सबसे प्रतिष्ठित शक्ति पीठों में से एक है। इसकी विशिष्टता इस विश्वास में है कि इसमें देवी सती का गर्भाशय और महिला जननांग स्थित है। यह मंदिर प्रजनन क्षमता और स्त्री शक्ति का जश्न मनाता है, और वार्षिक अंबुबाची मेला देवी के मासिक धर्म चक्र का प्रतीक है। इस दौरान, मंदिर तीन दिनों तक बंद रहता है, और भक्तों का मानना है कि पृथ्वी स्वयं पुनर्जन्म की प्रक्रिया से गुज़रती है।

● **मेहंदीपुर बालाजी मंदिर, राजस्थान :** दौसा के पास स्थित, यह मंदिर भगवान हनुमान को समर्पित है, लेकिन यह मुख्य रूप से अपने भूत-प्रेत भगाने के अनुष्ठानों के लिए जाना जाता है। पूरे भारत से लोग बुरी आत्माओं और अलौकिक कष्टों से मुक्ति पाने के लिए यहां आते हैं। मंदिर के अंदर का माहौल बहुत ही शक्तिशाली होता है, जिसमें भक्त मंत्रों का जाप करते हैं, पुजारी पूजा-पाठ करते हैं, और कुछ दर्शनार्थी ऐसे नाटकीय अनुभव करते हैं जिन्हें बुरी आत्माओं के असर का रूप माना जाता है.

■ पं. नित्यानंद

• भगवान विष्णु...

कछुए की अंगूठी

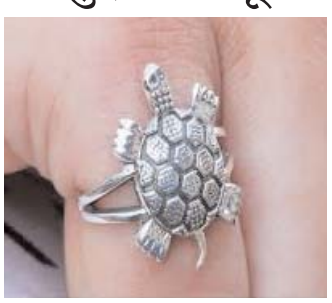

लोगों के हाथ में कछुए की अंगूठी देखने को मिलती है। अधिकतर लोगों के लिए इसे पहनना फैशन हो गया है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि कछुए की अंगूठी पहनने से जीवन में खुशहाली और घर में धन-संपन्नता आती है? ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, कछुए की अंगूठी बहुत शुभ मानी जाती है। इस अंगूठी को भगवान श्री हरि विष्णु के कच्छप अवतार का स्वरूप माना जाता है। मान्यता है कि कछुए की अंगूठी पहनने से भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त होती है, जिससे जीवन में चल रही समस्याएं खत्म हो जाती हैं। रत्न शास्त्र के अनुसार, वृषभ और मकर राशि के जातकों के लिए कछुए की अंगूठी बड़ी शुभ मानी गई है। इन दोनों राशियों के जातकों को कछुए की अंगूठी अवश्य धारण करनी चाहिए। इन दोनों राशियों के लिए कछुए की अंगूठी बड़ी लाभदायक साबित हो सकती है। इस अंगूठी को पहनने से सुख-समृद्धि बढ़ती है और आत्मविश्वास भी बढ़ता है। इसके अलावा प्रेम जीवन भी सुधरता है।

• छींक...

शकुन शास्त्र के अनुसार, छींक सिर्फ एक शारीरिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि आने वाली घटनाओं का इशारा भी होती है। अगर घर से निकलते समय छींक आ जाए या सामने कोई छींक दे तो इसको कार्य में बाधा या असफलता का संकेत माना जाता है। अगर आप किसी शुभ और मांगलिक काम को करने के लिए निकल रहे हैं, और आपको छींक आ जाती है, तो इसे बहुत शुभ माना जाता है। यह सफलता और आकस्मिक धन लाभ की ओर इशारा करता है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित